











# संपादक की कलम से

## राजनीतिक हिंसा बंगाल की संस्कृति बन गई

पश्चिम बंगाल में पंचायत चुनाव में हुई हिंसा और उत्तर भारत के कड़ी राज्यों में भारी बारिश से पैदा हुए हालातों पर इस हफ्ते पंजाबी अखबारों ने अपनी राय बड़ी प्रमुखता से रखी है। पश्चिम बंगाल में पंचायत चुनाव के दौरान हुई हिंसा पर जालंधर से प्रकाशित जगबाणी लिखता है, हिंसाएँ पश्चिम बंगाल में चुनावों का अधिन्यां अंग बन चुकी है। वहां 2013 के पंचायत चुनावों में हुई हिंसा में कम से कम 80 लोग तथा 2018 के चुनावों में 13 लोग मारे गए थे। इस साल वोटिंग से पहले 27 लोग मारे गए जबकि मतदान के दौरान हुई झड़पों में 18 लोग मारे गए। अखबारों लिखता है, राज्य की 42 संसदीय सीटों की बड़ी संख्या ग्रामीण इलाकों में होने के कारण इन चुनावों के जरिए सभी पार्टियों ने 2024 के लोकसभा चुनावों से पहले अपनी शक्ति को जांचने की कोशिश की है। पंचायत चुनाव को प्रदेश में लोकसभा चुनाव का सेमीफाइनल माना जा रहा है। अखबार आगे लिखता है, इस हिंसा ने हमारे चुनावी प्रबंधन पर भी सवालिया निशान लगा दिए हैं। लोकतंत्र के सबसे निचले पायदान के चुनाव में यदि इतनी हिंसा हो रही है तो 2024 के लोकसभा के चुनावों में क्या होगा?

जालंधर से प्रकाशित अजीत लिखता है, पंचायती राज व्यवस्था के स्थापित हुए कई दशक बीत चुके हैं लेकिन ऐसा लगता है कि जिस भावना से इसे शुरू किया गया था, वह काफी हद तक लुप्त हो चुकी है। जो कुछ पंचायत चुनाव में पश्चिम बंगाल में देखने को मिला था दशक पहले बिहार में देखने को मिलता था, लेकिन अब ऐसा लगता है कि वहाँ इस प्रतिस्पर्धा में काफी पीछे छूट गया है। अखबार आगे लिखता है, इन चुनावों में तृणमूल कांग्रेस को बड़ी जीत मिली है। ममता बनर्जी ने कहा है कि इस बार हम लोकसभा चुनाव भी जीतेंगे, लेकिन ऐसा होता नहीं दिख रहा, क्योंकि लोकसभा चुनाव की कमान भारत चुनाव आयोग के हाथ में होगी, न कि राज्य चुनाव आयोग के हाथ में।

पंजाबी जागरण लिखता है, पश्चिम बंगाल में पंचायत चुनाव में वोटिंग के दिन भीषण हिंसक घटनाओं का होना निश्चित तौर पर अकेले इस राज्य के लिए ही नहीं बल्कि देश के नागरिकों के लिए चिंता का विषय है। इससे भी ज्यादा चिंताजनक बात यह है कि पंचायत चुनाव के दौरान बड़े पैमाने पर हिंसा की आशंका पहले से ही थी लेकिन इसे रोका नहीं जा सका। राज्य चुनाव आयोग चाहे कुछ भी दावा करे, वह स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराने में असमर्थ रहा है। अखबार आगे लिखता है, पंचायतों पर कब्जा करने की इस होड़ में खून-खाराबा इसलिए भी हो रहा है क्योंकि ग्रामीण विकास के लिए भारी मात्रा में धन उपलब्ध है और यह किसी से छिपा नहीं है कि विकास कार्यों के लिए जारी धन का एक बड़ा हिस्सा कैसे प्रष्ट तर्तों की जेब में चला जाता है।

सच कहूँ लिखता है, राजनीतिक हिंसा अब पश्चिम बंगाल की संस्कृति बन गई है। वहाँ ज्यादातर चुनाव हिंसा के बिना खत्म नहीं होते। शुरूआत में सभी राजनीतिक दल एक-दूसरे पर हिंसा भड़काने का आरोप लगाते हैं, जिसमें आम लोगों को भारी नुकसान उठाना पड़ता है। अखबार आगे लिखता है आगर हालात ऐसे ही रहे तो पश्चिम बंगाल में राजनीतिक दलों से लोगों का भरोसा उठ जाएगा और लोग वोट देना बंद कर देंगे। चंडीगढ़ से प्रकाशित पंजाबी ट्रिब्यून लिखता है, पंचायत चुनाव में इन्हें बड़े पैमाने पर हिंसा चिंता का कारण है। यह घटना सामाजिक संघर्ष के साथ-साथ इस तथ्य को भी दर्शाती है कि समाज और राजनीतिक दलों को लोकतंत्र की मूल भावनाओं को पहचानने से इनकार कर रहे हैं।

# चाँद से मिल प्रभुनाथ शुक्ल अंतरिक्ष विज्ञान में भारत एक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है। अंतरिक्ष की दुनिया में सबसे कम खर्च में हमारे वैज्ञानिकों ने बुलंदी का झंडा गाड़ा है। हम चाँद को जीतने निकल पड़े हैं। कभी हम साइकिल पर मिसाइल रखकर लार्चिंग पैड तक जाते थे, लेकिन आज हमारे पास अत्यधिक तकनीकी उपलब्ध है। जिसका लोहा अमेरिका और दुनिया के तकनीकी एवं साधन संपन्न देश मानते हैं। इसरो ने 14 जुलाई को श्रीहरि कोटा से सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से चंद्रयान -3 का सफलता पूर्वक प्रक्षेपण कर दिया। यान पृथ्वी की कक्षा में स्थापित भी हो गया है।

लिया जा रहा है। जनिवंतित किया जा सकता है। चंद्रमा कभी हमारे लिए होता था। दाढ़ी और नंबर उसके बारे में जानकारी। आज वैज्ञानिक सोध अपनी की वजह से हम चांद के चंद्रलोक के बारे में वैज्ञानिक कर रहे हैं। चंद्रलोक का जानकारी हमारे पास उल्लिखित चांद अब रहस्यमान वीवन बसाने के लिए जा रहे हैं। वैज्ञानिक श

अशोक भाटिया  
क्या आम आदमी पार्टी के अरविंद केजरीवाल की शर्त ने इस एकता को बनने से पहले ही बिगड़ दिया है? या विपक्षी दलों की अपनी समस्याओं ने इस एकता की सभावना को झटका दिया है? साल 2024 के लोकसभा चुनावों में भाजपा और नरेंद्र मोदी को चुनौती देने के लिए बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार कई महीनों से कोशिश में लगे हुए हैं। पिछले महीने 23 जून को पटना में 15 विपक्षी दलों की मीटिंग इस लिहाज से एक बड़ी सफलता मानी जा रही थी। पटना की मीटिंग के बाद यह तय हुआ था कि 10 से 12 जुलाई के बीच शिमला में विपक्षी दलों की दूसरी मीटिंग होगी जिसमें राज्यों में लोकसभा सीटों के बंटवारे पर चर्चा की जाएगी। इस मीटिंग की जिम्मेवारी कांग्रेस पार्टी पर संैकीर्ण गई थी। पहले से तय शिमला की यह मीटिंग रद्द हो चुकी है और अब यह मीटिंग 17 और 18 जुलाई को बेंगलुरु में होगी। इस बीच अरजेडी नेता लालू प्रसाद यादव ने भी दावा किया है कि बेंगलुरु में 17 दल एक साथ आ रहे हैं। लालू यादव ने कहा, "वो (भाजपा को) जो कहना है, कहते रहें, वो नहीं चाहते हैं कि इस पर चर्चा हो क्योंकि वो जा रहे हैं।" दूसरी विपक्षी एकता को लेकर चर्चा के बदल होने से ही विपक्षी एकता पर सवाल खड़े हुए हैं। हालांकि, इस सवाल की शुरूआत पटना की मीटिंग के बाद ही हो गई थी। उस वक्त आम आदमी पार्टी ने बयान जारी कर अपनी नाराजगी जाहिर की थी। देश की सत्ता हासिल करने के लिए होने वाले सियासी जंग में अब महज 10 महीने का ही वक्त बचा है। ऐसे में सत्ताधारी दल भाजपा के साथ ही कांग्रेस समेत तमाम विपक्षी दल भी अपनी-अपनी रणनीति बनाने और उसे वास्तविक आकार देने में जुटे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कद और भाजपा की देशव्यापी ताकत को देखते हुए विपक्षी दलों के बीच एकजुटता का प्रयास भी जारी है। इन सबके बीच अलग-अलग राज्यों में बीच-बीच में सियासी हलचल भी देखने को मिल रहा है। अभी महाराष्ट्र की राजनीति में बड़ा भूचाल आया हुआ है। पिछले कई महीनों से विपक्षी दलों को

एक जुट करने में जुटे एनसीपी अध्यक्ष शरद पवार को अपने भतीजे अंजित पवार की बगावत के बाद खुद अपनी पार्टी को बनाने की जहजहद से झूँझना पड़ रहा है। उधर से नौकरी के बदले जर्मीन केस में सोबीआई की ओर से तेजस्वी यादव को आरापीया बनाए जाने के बाद विपक्षी एक जुटाकी मुहिम को धार देने में जुटे विहार के मुख्यमंत्री और जेडीयू नेता नीतीश कुमार और आरजेडी के बीच सबकुछ ठीक नहीं होने की अटकलें भी लगाई जाने लगी हैं। नीतीश कुमार और राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश के बीच 3 जुलाई को हुई बैठक के बाद इन अटकलों को और हवा मिली है।

वहीं कांग्रेस की ओर से भी 2024 के लोकसभा चुनाव के लिए भाजपा के खिलाफ विपक्षी दलों की लामबंदी को लेकर कोई ज्यादा सक्रियता नहीं दिख रही है। इस मसले पर आगे बढ़कर अलग-अलग विपक्षी दलों को भरोसे में लेने को लेकर कांग्रेस में गंभीरता का साफ अभाव झलक रहा है। आगामी लोकसभा चुनाव में भाजपा के खिलाफ एक मजबूत विपक्षी गठबंधन बने या न बने, ये तो भविष्य में तय होगा लेकिन एक बात जरूर है कि चुनावी मुद्दों को लेकर कांग्रेस के साथ ही विपक्षी दलों के हाथ तंग नजर आ रहे हैं। कोई भी चुनाव मुद्दों और उन मुद्दों के जरिए बनें जाना चाहिए क्योंकि उसमें भी जब बात लोकसभा चुनाव की हो तो इस नजरिए से देशव्यापी चुनावी मुद्दों का महत्व बेहद बढ़ जाता है। ये वो बिन्दु हैं, जहां कांग्रेस समेत तमाम विपक्षी दल फिलहाल भाजपा से काफी पीछे नजर आ रहे हैं। विपक्ष नन्दें मोदी सरकार के खिलाफ वैसा चुनावी मुद्दा नहीं बना पा रहा है, जिसको हथियार बनाकर भाजपा को मात दे सके और यही पहलू 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा की सबसे बड़ी ताकत साबित होने वाला है।

ऐसा नहीं है कि विपक्षी दलों के लिए मुद्दों की कमी है लेकिन उन मुद्दों को लेकर लगातार संघर्ष करने की क्षमता और उसे जनता के बीच पहुंचाने की रणनीति का अभाव जरूर विपक्षी दलों में दिखता है। भाजपा मुद्दों को गढ़ने और जनता के बीच

उनको पहुंचाने में विपक्ष से कोसों आप नजर आती है। ये शायद ही कोई भूला होगा कि 2014 लोकसभा चुनाव से पहले कैसे भाजपा ने महंगाई और भ्रष्टाचार को मुद्दा बनाया। इनको आधार बनाकर भाजपा कंग्रेस की अगुवाई वाली यूपीए सरकार 2014 के लोकसभा चुनाव में मात दी थी भ्रष्टाचार और बढ़ती महंगाई के जरिए उस वक्त भाजपा ने जो माहौल तैयार किया था उस माहौल का बहुत बड़ा हाथ था जिसकर्म वजह से नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री कर चेहरा घोषित कर 2014 में भाजपा पहली बार अपनी बदौलत लोकसभा में बहुमत हासिल करने में कामयाब रही थी। उसके बाद भाजपा की राजनीतिक किंतु वर्ष में लगातार नए-नए अध्याय जुड़ते गए 2019 के लोकसभा चुनाव में भी विपक्ष नरेंद्र मोदी सरकार के खिलाफ चुनावी मुद्दा और उसके जरिए माहौल बनाने नाकामयाब रहा था जिसके कारण उस चुनाव में भाजपा को 2014 से भी बड़ी जीत हासिल हुई थी।

अब जब 2024 का लोकसभा चुनाव सामने है, तो उस नजरिए से भी न तो कंग्रेस और न ही कोई और विपक्षी दल महंगाई या फिर भ्रष्टाचार को ही लंबे वक्त के लिए जनता के बीच मुद्दा बनाने में कामयाब हो पा रहे हैं। मुद्दा बनाने के लिए जिस तरह का संघर्ष चाहिए, उसमें भूमिका संजीदगी की कमी को महसूस किया ज सकता है। ऐसा भी नहीं है कि अब महंगाई और भ्रष्टाचार कोई मुद्दा ही नहीं रहा है। हाँ देख ही रहे हैं कि कैसे रोजमर्रा की जरूरतें से जुड़े सामानों की कीमतों में आग लग रही है। पेट्रोल-डीजल के दामों को पिछले कुछ सालों में नई ही ऊंचाई मिली है। ध की रसोई के लिए आम आदमी को 8-10 साल पहले जितना खर्च करना पड़ता था अब उसके लिए ही दोगुना से लेकर तिगुना खर्च करना पड़ रहा है जबकि गरीब और मिडिल क्लास के लोगों के बीच प्रति व्यक्ति आय में उस रफतार से वृद्धि नहीं हुई है भ्रष्टाचार भी अलग-अलग तरीकों और स्वरूप में मौजूद है। कहने का मतलब है कि अभी भी महंगाई और भ्रष्टाचार हैं बहुत बड़ा मुद्दा लेकिन राजनीतिक और मीडिय विमश में उसको ज्यादा समय और महत्व

नहीं मिल पा रहा है। इसका एक बहुत बड़ा कारण है कि विपक्ष जनता तक इन मुद्दों के पहुंचाने में सफल नहीं हो पा रहा है और ऐसा करने के लिए लगातार संघर्ष करते नजर भी नहीं आ रहा है। मुद्दों की कमी नहीं है। महंगाई, भ्रष्टाचार के अलावा बेरोजगारी का मुद्दा भी मौजूद है। आलम ने ही कि जून के महीने में बेरोजगारी 8.45% तक पहुंच गया है। सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी (उटकए) द्वारा मुताबिक मई में ये आंकड़ा 7.68% था। तीसरी बार है जब इस साल बेरोजगारी दर 8% से ऊपर चली गई। शहरों के मुकाबले गांवों में बेरोजगारी दर ज्यादा देखी गई। गांवों में बेरोजगारी दर दो साल में सबसे अधिक देखी गई है। ये तो आंकड़े हैं वास्तविकता में भारत में लोगों का बेरोजगारी का दंश इससे कहीं ज्यादा झेलना पड़ रहा है। पिछले कुछ सालों से बेरोजगारी के मोर्चे पर देश में भयावह स्थिति है, इस बात से शायद ही कोई भी आर्थिक मामले का जानकार इनकार कर सकता है। ये ऐसे मुद्दे हैं, जिससे देश के गरीब और मिडिटल क्लास के लोगों का सबसे ज्यादा सामना हो रहा है।

उसी तरह गरीबी, आर्थिक असमानता द्वे तहत अमीर और गरीब के बीच बढ़ती खाई, ग्रामीण से लेकर शहरी इलाकों में आम लोगों के लिए बेहतर चिकित्सा, सुविधा का अभाव या फिर उसके बड़ी राशि का बोझ, बेहतर और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का लगातार महंगा होना जाना, धार्मिक आधार पर लोगों के बीच नफरत का बढ़ना। ये कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिनसे देश के ज्यादातर नागरिकों का सामना अक्सर होते रहता है हालांकि इनसे से कोई भी एक ऐसा मुद्दा नहीं है जिसके लेकर कांग्रेस समेत तमाम विपक्षी दलों द्वे नेता लगातार जनता के बीच संवाद कर रहे हों। अलग-अलग मुद्दों को भले ही चंचल दिनों के लिए विपक्षी दल उठाकर नरेंद्र मोदी सरकार को घेरने की कोशिश करते तो है लेकिन उनको देशव्यापी चुनावी मुद्दा बनाने के लिए गांव-देहात से लेकर सड़कों पर विपक्ष का निरंतर संघर्ष या कहें महीनों तक चलने वाला संघर्ष नहीं दिखता है।

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी, अडाण

समूह पर हिंडनबाग के खुलासे को लेकर जस्तर पिछले कुछ महीनों से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को घेरने का प्रयास करते रहे हैं। ये एक ऐसा मुद्दा है, जिसको समझने के लिए अर्थशास्त्री और बाजार का गणित समझने की जरूरत पड़ती है। शायद यही वजह है कि ये मुद्दा उन लोगों के बीच देशव्यापी मुद्दा के तौर पर तब्दील नहीं हो पाया जिनकी संख्या मतदान केंद्रों पर जाने की ज्यादा होती है। उसी तरह से विषयी दल सीधी आई और प्रवर्तन निर्देशालय यानी ईडी जैसी केंद्रीय जांच एजेंसियों के दुरुपयोग का मुद्दा उठाते रहे हैं। इन दलों का ये भी आरोप रहा है कि केंद्रीय जांच एजेंसियों का भय दिखाकर भाजपा विषयी दलों में तोड़फोड़ की गतिविधियों को भी अंजाम देने का काम करती है लेकिन ये मुद्दा भी आम लोगों के बीच उस तरह से हावी नहीं हो पाया है क्योंकि जांच एजेंसियों के दुरुपयोग का मसला कोई नया नहीं है। जिस दल की भी केंद्र में सरकार रही है, उस पर इस तरह के आरोप लगाते रहे हैं और देश की जनता के लिए ये कोई बहुत बड़ा चुनावी मुद्दा नहीं रहा है। ऐसे भी जब नेताओं पर जांच एजेंसी की ओर से किसी भी तरह की कार्रवाई होती है, तो जिस तरह की अवधारणा पहले से बनी हुई है, उसके तहत आम लोगों में उन कार्रवाई को लेकर एक तरह का सकारात्मक रुख ही देखने को मिलता है।

आगामी लोकसभा चुनाव के लिए भाजपा के पास एक और मुद्दा है, जिसकी काट खोजना विषय के लिए नाकों चने चबाना जैसा साबित हो रहा है। भाजपा के पास प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जैसा चेहरा है जिससे पार्टी को पिछले दो लोकसभा चुनाव में भारी जीत हासिल हुई थी और 2024 में भी पार्टी इसे अपना सबसे मजबूत पक्ष मान रही है। वहीं न तो कांग्रेस और न ही विषयी गठबंधन की संभावनाओं को देखते हुए विषय का कोई चेहरा अब तक सामने आया है। कांग्रेस समेत तमाम विषयी दलों का जो रखौया है, उसको देखते हुए ये भी कहा जा सकता है कि चुनाव से पहले नरेंद्र मोदी के खिलाफ विषय की ओर से किसी सर्वमान्य चेहरे की घोषणा होने की संभावना का दूर-दूर तक आसार नहीं है।

# भाजपा के खिलाफ 'विपक्षी एकता' की चर्चा अचानक गायब क्यों हो गई है ?

# चाँद से मिलने चला चंद्रयान -3



लिया जा रहा है। जनधन की हानि को नियंत्रित किया जा सका है। चंद्रमा कभी हमारे लिए किस्से कहानियों में होता था। दादी और नानी कि कहानियों में उसके बारे में जानकारी मिलती थी। लेकिन आज वैज्ञानिक शोध और तकनीकी विकास की वजह से हम चांद को जीतने में लगे हैं। चंद्रलोक के बारे में वैज्ञानिक जमीनी पड़ताल कर रहे हैं। चंद्रलोक की बहुत सारी जानकारी हमारे पास उपलब्ध है। दुनिया के लिए चांद अब रहस्य नहीं है। अब वहाँ मानव जीवन बसाने के लिए भी रिसर्च किए जा रहे हैं। वैज्ञानिक शोध से यह साबित हो

गया है कि चांद पर जीवन बसाना आसान है सफल प्रक्षेपण के बाद इसरो मिशन चंद्रयान-3 की सॉफ्ट लैंडिंग की तैयारी में जुटा है हमारा अभियान अगर असफल हो गया तो भारत दुनिया का चौथा देश बन जाएगा जिसकी पहचान चंद्रमा पर सफल लैंडिंग करने वाले देश के रूप में होंगी। निश्चित रूप से हमारे वैज्ञानिकों को इसमें सफलता मिलेगी। यह चंद्रयान -2 मिशन को आगे बढ़ाने की कोशिश है। क्योंकि यह अभियान वैज्ञानिकों के अथक प्रयास के बाद भी कक्षाश में स्थापित होने के पहले असफल हो गया था। लिहाजा उस अभियान से सबक लेते

हुए अतारक्ष वज्ञानका न सरा कामया का दूर कर लिया है। उम्मीद है कि देश का यह अभियान सफल होगा और भारत का नाम अंतरिक्ष युग में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा। चंद्रमा पर सफल और सुरक्षित लैंडिंग करने वाले अब तक सिर्फ तीन देश हैं जिसमें अमेरिका, रूस और चीन के बाद भारत भी इस बिरादरी में शामिल हो जाएगा। देश के लिए यह गर्व और गौरव का विषय होगा।

भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी इसरो के अनसार

यह मिशन पूरी तरह चंद्रयान- 2 की तरह ही होगा। अभियान पर करीब 615 करोड़ का खर्च आया है। यह 50 दिन बाद लैंड करेगा। इस यान में भी एक अविंटर, एक लैंडर और एक रोवर होगा। यह चंद्रयान -2 के मुकाबले इसका लैंडर 250 किलोग्राम अधिक वजनी होगा और 40 गुना अधिक स्थान का धेराव करेगा। यान की गति प्रतिघंटा 3.7 हजार किलोमीटर वैज्ञानिकों ने उस तकनीकी गड़बड़ी को दूर कर लिया है जिसकी वजह से चंद्रयान-2 सफलता के करीब पहुंचने के बाद भी फेल हो गया था। इस बार अंतरिक्ष संगठन की पूरी कोशिश है कि यह पूरी तरह सफल हो। 14 जुलाई को श्रीहरि कौटा से इस मिशन का आगाज किया जाएगा। चंद्रयान-3 को 01 अगस्त तक यह चंद्रमा की कक्षा में स्थापित किया जाएगा।

**वैश्वक मुद्दों पर मिलकर निंत आगे  
बढ़ रहे हैं भारत- फ्रांस !**

सुनाल कुमार महला  
भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी  
हाल फिलहाल (13 और 14  
जुलाई 2023) भारत के दो अहम  
सहयोगी देशों फ्रांस और यूरोप के दौरे  
पर हैं। फ्रांस के राष्ट्रपति मैनुएल  
मैक्रॉन के निमत्रण पर प्रधानमंत्री फ्रांस  
पहुंचे हैं और प्रधानमंत्री की यह छठी  
फ्रांस यात्रा है। जानकारी देना चाहूंगा  
कि उनकी सबसे हालिया यात्रा  
हिरोशिमा में जी-7 शिखर सम्मेलन  
के दौरान हुई थी। गौरतलब है कि  
हाल फिलहाल, फ्रांस के 'राष्ट्रीय  
बैस्टिल डे' समारोह में सम्पादित  
अतिथि के रूप में राष्ट्रपति मैक्रॉन के  
साथ हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र  
मोदी शामिल हुए हैं। जानकारी देना  
चाहूंगा कि बैस्टिल डे फ्रांस का  
राष्ट्रीय दिवस है जो कि प्रत्येक वर्ष  
14 जुलाई के दिन मनाया जाता है।  
भारतीय प्रधानमंत्री की यह यात्रा  
अत्यंत विशेष और महत्वपूर्ण  
इसलिए भी है क्योंकि यह यात्रा ऐसे  
समय में हो रही है, जब भारत-फ्रांस  
रणनीतिक साझेदारी 25वें वर्ष में

प्रवृश कर चुका है। प्रधानमंत्रा मादा  
की यह यात्रा ऐसे समय में हो रही है,  
जब भारत-फ्रांस रणनीतिक साझेदारी  
25 वें वर्ष में घूंच गई है। पच्चीस  
सालों का समय बहुत लंबा होता है  
और पच्चीस सालों में दोनों देशों के  
संबंधों में काफी मजबूती आई है  
और दोनों देशों में आपसी विश्वास  
कायम हुआ है। पाठकों को  
जानकारी देना चाहूंगा कि फ्रांस और  
भारत ने वर्ष 1998 में एक  
रणनीतिक साझेदारी स्थापित की थी,  
और पिछले एक दशक में संबंधों में  
मजबूती आई है। वास्तव में दोनों  
देशों की दोस्ती संवेदनशील और  
संप्रभु ढोमेन सहित कई मुद्दों पर  
सहयोग को बढ़ा रही है। फ्रांस और  
भारत के रक्षा व्यापार संबंधों को  
सबसे अहम माना जा रहा है। भारत  
के प्रधानमंत्री ने यह बात कही है कि  
फ्रांस हामेक इन ईंडियालॉ और  
आत्मनिर्भर भारत में एक महत्वपूर्ण  
भागीदार है। फिर चाहे वह पनडुब्बी  
हो या नौसैनिक विमान, दोनों देश  
एक साथ मिलकर न केवल अपनी,

# हुआ ?

वास्तविक समय डेटा देने में मदद मिलेगी। पानी एक ही स्थान पर जमा न हो इसके लिए जल निकासी व्यवस्था का उचित प्रबंधन आवश्यक है। ठोस अपशिष्ट हाइड्रोलिक खुरदरापन बढ़ाता है, रुकावट का कारण बनता है और आम तौर पर प्रवाह क्षमता को कम करता है। पानी के मुक्त प्रवाह की अनुमति देने के लिए इन नलियों को नियमित आधार पर साफ करने की आवश्यकता है। शहरीकरण के कारण, भूजल पुनर्भरण में कमी आई है और वर्षा और परिणामस्वरूप बाढ़ से चरम अपवाह में वृद्धि हुई है। यह चरम अपवाह को कम करने और भूजल स्तर को ऊपर उठाने के दोहरे उद्देश्यों को पूरा करेगा। शहरी जल निकाय जैसे झीलें, टैक और तालाब भी तूफानी जल के बहाव को कम करके शहरी बाढ़ के प्रबंधन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

# भारत की बाढ़ प्रबंधन योजना का क्या हुआ?

-**द्वारा सत्यवान सरभ**  
ग्राहीय बाढ़ आयोग की प्रमुख सिफारिशें जैसे बाढ़ संभावित क्षेत्रों का वैज्ञानिक मूल्यांकन और फलट प्लेन जोनिंग एक्ट का अधिनियमन अभी तक अमल में नहीं आया है। सीडब्ल्यूसी का बाढ़ पूर्वानुमान नेटवर्क देश को पर्याप्त रूप से कवर करने के लिए पर्याप्त नहीं है। इसके अलावा, अधिकांश मौजूदा बाढ़ पूर्वानुमान स्टेशन चालू नहीं हैं। 2006 में केंद्रीय जल आयोग (सीडब्ल्यूसी) द्वारा गठित एक टास्क फोर्म ने बाढ़ जोखिम मानचित्रण का कार्य पूरा नहीं किया। बाढ़ क्षति का आकलन पर्याप्त रूप से नहीं किया गया। बाढ़ प्रबंधन कार्यक्रमों के तहत परियोजनाओं के पूरा होने में देरी मुख्य रूप से केंद्र की सहायता की कमी के कारण होती है। बाढ़ प्रबंधन के कार्य एकीकृत तरीके से नहीं किये जाते हैं। अमर ने अधिकांश तरीकों में अमर अमर (आपादीन) या आपादीन

आयोग, का स्थापना 1976 म बृतानी और सिंचाई मंत्रालय द्वारा भारत के बाढ़-नियंत्रण उपर्योगों का अध्ययन करने के लिए की गई थी, योग्यकि 1954 के राष्ट्रीय बाढ़ नियंत्रण कार्यक्रम के तहत शुरू की गई परियोजनाएं ज्यादा सफलता हासिल करने में विफल रहीं।

हाल ही में, उत्तरी राज्यों में बाढ़ ने जीवन और संपत्ति की तबाही मचाई है, जो इस क्षेत्र में एक समस्या है। हालाँकि, बाढ़ केवल उत्तर-पूर्वी भारत तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह देश के कई अन्य क्षेत्रों को प्रभावित करती है। मानसून के दौरान लगातार और भारी वर्षा जैसे प्राकृतिक कारकों के अलावा, मानव निर्मित कारक भी हैं जो भारत में बाढ़ में योगदान करते हैं। भारत अत्यधिक असुरक्षित है, योग्यकि इसके अधिकांश भौगोलिक क्षेत्र में वार्षिक बाढ़ का खतरा रहता है। बाढ़ के कारण ऐसे घटनाएँ होती हैं जैसे भूकंप जैसे

विवाह अनुकूलन आर शमन स्थित आर मानपदा प्रबंधन और तैयारियों में नियंत्रितता को दर्शाती है। अतः एक कीकृत बाढ़ प्रबंधन प्रणाली की मावश्यकता है। 1980 में, राष्ट्रीय बाढ़ मायोग ने 207 सिफारिशें और चार यापक टिप्पणियाँ कीं। सबसे पहले, इसने न्हाकि भारत में वर्षा में कोई वृद्धि नहीं ई और इस प्रकार, बाढ़ में वृद्धि नावजनित कारकों जैसे बनों की कटाई, तल निकासी की भीड़ और बुरी तरह से नयोजित विकास कार्यों के कारण हुई। सरा, इसने बाढ़ को नियंत्रित करने के लए अपनाए गए तरीकों, जैसे तटबंधों पौर जलशयों की प्रभावशीलता पर बाल उठाया और सुझाव दिया कि इन अंचनाओं का निर्माण उनकी भावशीलता का आकलन होने तक रोक दिया जाए। हालाँकि, इसमें यह कहा गया था कि ऐसे दोनों दोनों दो व्यापारी हैं, ताकि

इसके अलावा पूर्वार्नुमान स्टेटमेंट केंद्रीय जल विभाग द्वारा गठित एक टॉप माननीय विद्युत क्षमता का आवास किया गया। तबत हरियोजना योजना के मुख्य रूप से भारत के कारण होती है एकीकृत तरीके से भारत के अधिक प्रबंधन योजना बांधों में से आपातकालीन प्रबंधन योजना नवीनतम तरीके से शृंखला का चेतावनीयों का एक नवीनतम तरीके से विवरण दिया गया है। यह नवीनतम तरीके से विवरण दिया गया है।

# चित्रकूट - उन्नाव संदेश

घर में घुसकर विधवा से दुराचार करने के मामले में आरोपी को 10 वर्ष की कैद- जिला जज ने सुनाई सजा

**चित्रकूट:** बच्चों के पास गति में घर में सो रही विधवा महिला के साथ दुराचार के मामले में जिला जज विष्णु कुमार शर्मा ने दोष सिद्ध होने पर आरोपी को 10 वर्ष कठोर कारावास की सजा सुनाई है। साथ ही 12 हजार रुपए के अर्थदान से भी दण्डित किया है।

जिला शासकीय अधिकारी फौजबाजी शाम पुलिस मिश्न ने बताया कि पीडिता अपने घर में तब्बों के साथ खाना खेने के बाद घर में सो रही थीं। इस दौरान सीतापुर चौकी क्षेत्र के अन्तर्गत चैगिलिया निवासी विनोद पुत्र गया प्रसाद पीडिता के घर के अन्दर घुस आया और जबरन उसके साथ दुराचार किया। लोक लाज के भर से पीडिता ने घटना के कुछ दिन बाद इस मामले में रिपोर्ट कराई। पीडिता के अनुदर घटना के पाच वर्ष पूर्व उसके पासी की मौत हो गयी थी। वह अपने तीन बच्चों को मजदूरी करके पालन पोषण करती थी। आरोपी विनोद ने उसके साथ 10 नवंबर 2021 के दुराचार किया था। पुलिस अधीक्षक के आदेश पर उसकी रिपोर्ट तीन जनवरी 2022 को लिखी गयी थी। रिपोर्ट दर्ज होने के बाद पुलिस ने इस मामले में न्यायालय में आरोप पत्र दाखिल किया।

बचाव और अभियोजन पक्ष के अधिकारीओं की दलीलें सुनने के बाद जिला जज विष्णु कुमार शर्मा ने शनिवार को इस मामले में नियंत्रण सुनाया। जिसमें आरोपी विनोद पर घर में घुसकर दुराचार करने का दोष सिद्ध होने पर 10 वर्ष के कठोर कारावास और 12 हजार रुपए अर्थदान की सजा सुनाई।

**यातायात पुलिस कर्मियों को बारिथ से बचाने को एसपी ने बांटे छाते**



अखंड भारत संदेश

**चित्रकूट:** पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला ने बारिथ से बचाव को द्राफिक चैरैंप हर यातायात पुलिस के जवानों को छाता बांटे।

शनिवार को यातायात पुलिस को बारिथ में भी यातायात व्यवस्था चैकस रखने को इच्छा करने पड़ती है। रायश से लगातार भीगने से पुलिस कर्मी बीमार पड़ सकते हैं। इसके मद्देनजर पुलिस अधीक्षक ने यातायात पुलिस के सभी जवानों को छाता बांटा। यातायात पुलिस के जवान बारिथ में भी खड़े रहकर लोगों की सेवा कर सकते।

इस मौके पर एसपी चक्रपाणी निपाठी, सीओ यातायात/लाइन्स शीलता प्रसाद पांडेय, प्रधारी यातायात मनोज कुमार, पीआरओ प्रदीप कुमार पाल आदि मौजूद रहे।

**पुलिस ने दबोचे तीन वारंटी**

अखंड भारत संदेश

**चित्रकूट:** पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के द्वारा एक दोषी के दरागा राक्षी मौर्यी को आक्षरी जारी कुमार सिंह के साथ पॉक्यों एक के बांधकांड मंजित यादव पुत्र मात्रप्रसाद यादव निवासी लौरी थाना रेपुरा को गिरफतार किया। कोतवाली की ओर के दरोगा रायश्वर्यम सिंह ने सिपाही

राहल देव के साथ एक दोषी को गिरफतार किया। जहां डॉक्टरों ने देखते ही उसे मृत घोषित कर दिया। युवक की मौत की खबर सुनते ही उसके परिजनों को रो रो कर बुरा हाल हो गया। परिजन बिना पोस्टमार्टम कराए शब को अपने साथ ले गए।

प्राप्त जानकारी के अनुसार जनपद की सीमा क्षेत्र से लगे मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले के बारीगढ़ निवासी 27 वर्षीय नरसीम पुत्र चंद्र को घर में किसी जहरील सपे ने डस लिया, जिससे वह अचेत हो गया। परिजन बिना पोस्टमार्टम कराए शब को अपने साथ ले गए।

प्राप्त जानकारी के अनुसार जनपद की सीमा क्षेत्र से लगे मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले के बारीगढ़ निवासी 27 वर्षीय नरसीम पुत्र चंद्र को घर में किसी जहरील सपे ने डस लिया, जिससे वह अचेत हो गया। परिजन बिना पोस्टमार्टम कराए शब को अपने साथ ले गए।

जहरीले सर्प ने युवक को डसा, मौत

महोबा। जहरीले सांप के डसने से युवक की हालत बिंदगी गई। वह देख

उसके परिजन उपचार के लिए जिला अस्पताल लेकर गये। जहां डॉक्टरों ने देखते ही उसे मृत घोषित कर दिया। युवक की मौत की खबर सुनते ही उसके परिजनों का रो रो कर बुरा हाल हो गया। परिजन बिना पोस्टमार्टम कराए शब को अपने साथ ले गए।

प्राप्त जानकारी के अनुसार जनपद की सीमा क्षेत्र से लगे मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले के बारीगढ़ निवासी 27 वर्षीय नरसीम पुत्र चंद्र को घर में किसी जहरील सपे ने डस लिया, जिससे वह अचेत हो गया। परिजन बिना पोस्टमार्टम कराए शब को अपने साथ ले गए।

जहरीले सर्प ने युवक को डसा, मौत

महोबा। जहरीले सांप के डसने से युवक की हालत बिंदगी गई। वह देख

उसके परिजन उपचार के लिए जिला अस्पताल लेकर गये। जहां डॉक्टरों ने देखते ही उसे मृत घोषित कर दिया। युवक की मौत की खबर सुनते ही उसके परिजनों का रो रो कर बुरा हाल हो गया। परिजन बिना पोस्टमार्टम कराए शब को अपने साथ ले गए।

जहरीले सर्प ने युवक को डसा, मौत

महोबा। जहरीले सांप के डसने से युवक की हालत बिंदगी गई। वह देख

उसके परिजन उपचार के लिए जिला अस्पताल लेकर गये। जहां डॉक्टरों ने देखते ही उसे मृत घोषित कर दिया। युवक की मौत की खबर सुनते ही उसके परिजनों का रो रो कर बुरा हाल हो गया। परिजन बिना पोस्टमार्टम कराए शब को अपने साथ ले गए।

जहरीले सर्प ने युवक को डसा, मौत

महोबा। जहरीले सांप के डसने से युवक की हालत बिंदगी गई। वह देख

उसके परिजन उपचार के लिए जिला अस्पताल लेकर गये। जहां डॉक्टरों ने देखते ही उसे मृत घोषित कर दिया। युवक की मौत की खबर सुनते ही उसके परिजनों का रो रो कर बुरा हाल हो गया। परिजन बिना पोस्टमार्टम कराए शब को अपने साथ ले गए।

जहरीले सर्प ने युवक को डसा, मौत

महोबा। जहरीले सांप के डसने से युवक की हालत बिंदगी गई। वह देख

उसके परिजन उपचार के लिए जिला अस्पताल लेकर गये। जहां डॉक्टरों ने देखते ही उसे मृत घोषित कर दिया। युवक की मौत की खबर सुनते ही उसके परिजनों का रो रो कर बुरा हाल हो गया। परिजन बिना पोस्टमार्टम कराए शब को अपने साथ ले गए।

जहरीले सर्प ने युवक को डसा, मौत

महोबा। जहरीले सांप के डसने से युवक की हालत बिंदगी गई। वह देख

उसके परिजन उपचार के लिए जिला अस्पताल लेकर गये। जहां डॉक्टरों ने देखते ही उसे मृत घोषित कर दिया। युवक की मौत की खबर सुनते ही उसके परिजनों का रो रो कर बुरा हाल हो गया। परिजन बिना पोस्टमार्टम कराए शब को अपने साथ ले गए।

जहरीले सर्प ने युवक को डसा, मौत

महोबा। जहरीले सांप के डसने से युवक की हालत बिंदगी गई। वह देख

उसके परिजन उपचार के लिए जिला अस्पताल लेकर गये। जहां डॉक्टरों ने देखते ही उसे मृत घोषित कर दिया। युवक की मौत की खबर सुनते ही उसके परिजनों का रो रो कर बुरा हाल हो गया। परिजन बिना पोस्टमार्टम कराए शब को अपने साथ ले गए।

जहरीले सर्प ने युवक को डसा, मौत

महोबा। जहरीले सांप के डसने से युवक की हालत बिंदगी गई। वह देख

उसके परिजन उपचार के लिए जिला अस्पताल लेकर गये। जहां डॉक्टरों ने देखते ही उसे मृत घोषित कर दिया। युवक की मौत की खबर सुनते ही उसके परिजनों का रो रो कर बुरा हाल हो गया। परिजन बिना पोस्टमार्टम कराए शब को अपने साथ ले गए।

जहरीले सर्प ने युवक को डसा, मौत

महोबा। जहरीले सांप के डसने से युवक की हालत बिंदगी गई। वह देख

उसके परिजन उपचार के लिए जिला अस्पताल लेकर गये। जहां डॉक्टरों ने देखते ही उसे मृत घोषित कर दिया। युवक की मौत की खबर सुनते ही उसके परिजनों का रो रो कर बुरा हाल हो गया। परिजन बिना पोस्टमार्टम कराए शब को अपने साथ ले गए।

जहरीले सर्प ने युवक को डसा, मौत

महोबा। जहरीले सांप के डसने से युवक की हालत बिंदगी गई। वह देख

उसके परिजन उपचार के लिए जिला अस्पताल लेकर गये। जहां डॉक्टरों ने देखते ही उसे मृत घोषित कर दिया। युवक की मौत की खबर सुनते ही उसके परिजनों का रो रो कर बुरा हाल हो गया। परिजन बिना पोस्टमार्टम कराए शब को अपने साथ ले गए।

जहरीले सर्प ने युवक को डसा, मौत

महोबा। जहरीले सांप के डसने से युवक की हालत बिंदगी गई। वह देख

उसके परिजन उपचार के लिए जिला अस्पताल लेकर गये। जहां डॉक्टरों ने देखते ही उसे मृत घोषित कर दिया। युवक की मौत की खबर सुनते ही उसके परिजनों का

